आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान
सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077

राजभाषा ई-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक (जनवरी-जून-2026)

अंक-10, वर्ष-2026

राजभाषा ई-पत्रिका

अंक-10, वर्ष 2026

संरक्षक
डॉ. अनुप अन्वीकर
निदेशक

संपादक
डॉ. वंदना शर्मा
उपनिदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल
प्रशासन अधिकारी
श्रीमती मीनाक्षी भसीन
श्री रघुबर दत्त

विषय सूची **पृ.सं.**

1. संरक्षक की कलम से 02
2. संस्थान के निदेशक महोदय से संवाद 03
3. कर्मचारियों का पन्ना
   लघु लेख 09
4. संस्थान की गतिविधियां
   - संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला 13
   - प्रशिक्षण कार्यक्रम 14
   - संवाद (SANVAD) 2026 का आयोजन 17
   - स्वच्छता दिवस 21
   - अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 23
   - पारंगत प्रशिक्षण 26
   - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (सप्ताह) 27
   - विश्व मलेरिया दिवस 29
5. संस्थान में सेवा-निवृत एवं नई नियुक्तियां 31-32

राजभाषा ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों से पत्रिका के उल्लेखित सदस्यों की सहमति/असहमति होना अनिवार्य नहीं है, इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

संरक्षक की कलम से :-

मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हम आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान

की राजभाषा ई-पत्रिका का 10वाँ ई-अंक (जनवरी-जून, 2026) आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह ई-पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रभावी माध्यम है, बल्कि संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति तथा कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का भी सशक्त मंच है। हमारा संस्थान राजभाषा संबंधी प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। राजभाषा का प्रयोग हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी होने के साथ-साथ प्रशासनिक दक्षता और सुशासन को सुदृढ़ बनाने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस अंक में साक्षात्कार श्रृंखला के अंतर्गत मैंने विज्ञान, राजभाषा हिंदी तथा संस्थान में हिंदी के प्रभावी प्रयोग से संबंधित अपने विचार साझा किए हैं। मुझे विश्वास है कि यह संवाद संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यालयीन एवं वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी सकारात्मक सोच को और सुदृढ़ बनाएगा।

इस अंक में सामान्य आलेख के साथ '**संस्थान की गतिविधियाँ**' शीर्षक के अंतर्गत इस छ:माही के दौरान आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों, जैसे **हिंदी कार्यशाला**, **प्रशिक्षण कार्यक्रम, संवाद कार्यक्रम, स्वच्छता दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, पारंगत प्रशिक्षण अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** तथा **विश्व मलेरिया दिवस** से संबंधित गतिविधियों का समावेश किया गया है। पत्रिका के अंत में इस अवधि के दौरान संस्थान से सेवा-निवृत्त तथा नव-नियुक्त कार्मिकों का परिचय एवं उनके प्रति शुभकामनाएँ भी प्रकाशित की गई हैं।

मुझे विश्वास है कि यह ई-पत्रिका सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा संस्थान में हिंदी में कार्य करने के वातावरण को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक बनेगी। मैं संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए अपने संवैधानिक एवं प्रशासनिक दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे।

इस ई-पत्रिका के संबंध में आपके बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं। आपके सुझाव हमारे लिए निरंतर प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का स्रोत होंगे तथा आपके और हमारे मध्य सार्थक संवाद एवं विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम भी बनेंगे। हमें विश्वास है कि आपके सहयोग एवं सहभागिता से यह ई-पत्रिका निरंतर अधिक उपयोगी एवं समृद्ध होती रहेगी।

(डॉ. अनुप अन्वीकर)
निदेशक

संस्थान के डॉ. अनुप अन्वीकर, निदेशक से बातचीत

राजभाषा ई-पत्रिका में वैज्ञानिकों के साक्षात्कारों की श्रृंखला के अंतर्गत प्रस्तुत अंक में संस्थान के निदेशक महोदय, डॉ. अनुप अन्वीकर से सहायक निदेशक (राजभाषा), डॉ. आर. एम. पोरवाल द्वारा लिए गए साक्षात्कार को सम्मिलित किया गया है। विश्वास है कि यह साक्षात्कार अपने वैचारिक एवं प्रेरणादायी स्वरूप के कारण संस्थान के वैज्ञानिकों को राजभाषा हिंदी में अनुसंधान-पत्रों के लेखन एवं प्रस्तुतीकरण हेतु प्रोत्साहित करेगा।

उल्लेखनीय है कि डॉ. अनुप अन्वीकर अपने प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक कार्यों तथा समय-समय पर आयोजित बैठकों/कार्यक्रमों में यथासंभव राजभाषा हिंदी का ही प्रयोग करते हैं, जो राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का परिचायक है। इसके अतिरिक्त वे अपने वैज्ञानिक शोध-पत्रों का प्रस्तुतीकरण भी हिंदी में करते रहे हैं, जिससे वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को सुदृढ़ आधार प्राप्त होता है। प्रस्तुत हैं डॉ. अनुप अन्वीकर से हुए इस प्रेरक एवं विचारोत्तेजक संवाद के कुछ प्रमुख अंश :-

प्रश्न-1. आपके जीवनवृत्त एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के मद्देनजर कृपया अपना परिचय दें।

उत्तर: वर्तमान में मैं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में निदेशक के रूप में कार्यरत हूँ। इसके साथ ही एसीएसआईआर-आईसीएमआर चिकित्सा अनुसंधान संकाय के डीन तथा आईसीएमआर-राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान के प्रभारी निदेशक के रूप में भी दायित्वों का निर्वहन कर रहा हूँ। इससे पूर्व मुझे राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा के निदेशक के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ, जहाँ मुझे वैज्ञानिक अनुसंधान, संस्थागत विकास तथा प्रशासनिक नेतृत्व के विभिन्न आयामों पर कार्य करने का अनुभव मिला।

मेरी शैक्षणिक पृष्ठभूमि चिकित्सा तथा जैव-चिकित्सा अनुसंधान की है। पिछले तीन दशकों से मेरा कार्य मुख्यतः संक्रामक एवं वाहक-जनित रोगों, विशेषकर **मलेरिया**, के निदान, उपचार, निगरानी,

नियंत्रण तथा उन्मूलन से संबंधित अनुसंधान पर केंद्रित रहा है। मेरे शोध कार्यों में मलेरिया, डेंगू एवं चिकनगुनिया के लिए नवीन नैदानिक तकनीकों का विकास एवं मूल्यांकन, मलेरिया-रोधी औषधियों के बहु-केंद्रीय नैदानिक परीक्षण, गर्भावस्था में मलेरिया, मलेरिया परजीवी में औषधि प्रतिरोध तथा औषधि सुरक्षा (फार्माकोविजिलेंस) जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल रहे हैं।

मेरे वैज्ञानिक जीवन की उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक भारत में पहली बार **PfHRP2/3 जीन विलोपन (Gene Deletion)** की पहचान करना रही, जिसके कारण यह स्पष्ट हुआ कि मलेरिया के **रैपिड डायग्नोस्टिक टेस्ट (RDT)** की विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है। इस शोध ने न केवल मलेरिया निदान की वैज्ञानिक समझ को नई दिशा दी, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर निदान एवं निगरानी संबंधी रणनीतियों के पुनर्मूल्यांकन का आधार भी प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, मलेरिया उन्मूलन के लिए कार्यान्वयन अनुसंधान (Implementation Research) के अंतर्गत समुदाय-आधारित मॉडल विकसित करने में मेरी सक्रिय भूमिका रही, जिसे बाद में ओडिशा सरकार ने व्यापक स्तर पर अपनाया और जिसके सकारात्मक परिणाम राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहे गए।

मेरे लिए वैज्ञानिक अनुसंधान का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान का सृजन नहीं, बल्कि उसे समाज के हित में व्यवहारिक समाधान के रूप में स्थापित करना है। इसी दृष्टिकोण के साथ मैं अनुसंधान को प्रयोगशाला से जनसामान्य तक पहुँचाने, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को अधिक सुदृढ़ बनाने तथा साक्ष्य-आधारित नीतियों के विकास के लिए निरंतर कार्य कर रहा हूँ। **एसीएसआईआर-आईसीएमआर** के डीन के रूप में मेरा विशेष प्रयास देशभर के आईसीएमआर संस्थानों में उच्च गुणवत्ता वाले पीएच.डी. कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना तथा युवा वैज्ञानिकों और शोधार्थियों को उत्कृष्ट वैज्ञानिक नेतृत्व के लिए तैयार करना है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि **विज्ञान, नवाचार, बहु-विषयक सहयोग और सशक्त जनस्वास्थ्य व्यवस्था** के समन्वित प्रयासों से न केवल मलेरिया, बल्कि अन्य संक्रामक रोगों पर भी प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। मेरा उद्देश्य ऐसे अनुसंधान एवं संस्थागत तंत्र का विकास करना है, जो सीधे समाज के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए और **स्वस्थ, आत्मनिर्भर तथा विकसित भारत** के निर्माण में सार्थक योगदान दे।

प्रश्न-2. आप एक वैज्ञानिक एवं संस्थान प्रमुख के रूप में वर्तमान पीढ़ी को विज्ञान, नैतिक मूल्यों और आध्यात्म के समन्वय के संबंध में क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर: मेरा मानना है कि विज्ञान और आध्यात्म एक-दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान हमें तर्क नवाचार और अनुसंधान की दिशा देता है, जबकि आध्यात्म हमें नैतिकता, आत्मानुशासन और मानवीय संवेदनाओं से जोड़ता है। इन दोनों का संतुलित समन्वय ही व्यक्ति के समग्र विकास का आधार बनता है।

वर्तमान समय में युवा पीढ़ी के लिए केवल तकनीकी दक्षता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सत्यनिष्ठा, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों का समावेश भी उतना ही आवश्यक है। मेरे अनुभव में *श्रीमद्भगवद्गीता* के कर्मयोग, धैर्य और कर्तव्यनिष्ठा के सिद्धांत वैज्ञानिक जीवन में भी समान रूप से प्रेरणादायक हैं और कठिन परिस्थितियों में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मैं युवाओं से यही कहना चाहूँगा कि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए निरंतर सीखने की जिज्ञासा बनाए रखें, नवाचार को प्रोत्साहित करें तथा नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएं। विज्ञान तभी सार्थक है, जब उसका उद्देश्य मानवता और समाज के कल्याण से जुड़ा हो।

प्रश्न-3. संस्थान के निदेशक के रूप में आप वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को किस प्रकार प्रोत्साहित कर रहे हैं?

उत्तर : किसी भी संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रभावी क्रियान्वयन केवल नियमों के अनुपालन तक सीमित न होकर संस्थान की कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग होना चाहिए। मेरा सदैव यह प्रयास रहा है कि संस्थान में प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक अनुसंधान एवं तकनीकी गतिविधियों में भी यथासंभव राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़े। इस उद्देश्य से मैं प्रत्येक बैठक में यथासंभव हिंदी में संवाद करता हूँ तथा फाइलों एवं पत्रों पर अपने हस्ताक्षर भी हिंदी में ही करता हूँ।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान में समय-समय पर राजभाषा संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, हिंदी पखवाड़ा तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन किया जाता है। वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को वैज्ञानिक लेखन, शोध-पत्रों के सार (Abstract), तकनीकी प्रस्तुतियों तथा अन्य उपयुक्त वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए निरंतर प्रेरित किया जाता है। साथ ही, मैं स्वयं भी अपने प्रशासनिक कार्यों, वैज्ञानिक प्रस्तुतियों एवं अन्य आधिकारिक गतिविधियों में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करता हूँ, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि नेतृत्व का आचरण ही सबसे प्रभावी प्रेरणा का स्रोत होता है।

इसके अतिरिक्त, संस्थान में वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु दक्ष बनाने के उद्देश्य से जुलाई-नवंबर 2023, जनवरी-मई 2024 तथा जनवरी-मई 2026 सत्रों में क्रमशः 29, 18 एवं 28 प्रतिभागियों को **'पारंगत'** प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षणोपरांत आयोजित **'पारंगत'** परीक्षाओं में सभी प्रतिभागी उत्कृष्ट अंकों के साथ सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए, जो संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ती प्रतिबद्धता एवं सकारात्मक कार्य-संस्कृति का प्रमाण है।

मेरा मानना है कि वैज्ञानिक उत्कृष्टता और राजभाषा हिंदी का प्रयोग एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि वैज्ञानिक ज्ञान को सरल एवं प्रभावी हिंदी में प्रस्तुत किया जाए, तो उसका लाभ अधिक व्यापक स्तर पर समाज, विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है। इसी सोच के साथ संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रश्न-4.आप वैज्ञानिक शोध-पत्रों एवं प्रस्तुतियों में हिंदी के प्रयोग को किस प्रकार देखते हैं? क्या आपने अपने वैज्ञानिक कार्यों को हिंदी में प्रस्तुत किया है? यदि हाँ, तो इस पहल के प्रति वैज्ञानिक समुदाय एवं सहकर्मियों की क्या प्रतिक्रिया रही है?

उत्तर : मेरा मानना है कि विज्ञान का मूल उद्देश्य ज्ञान का सृजन एवं उसका व्यापक प्रसार है। भाषा इस ज्ञान को समाज तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएँ वैज्ञानिक विचारों और उपलब्धियों को अधिक व्यापक स्तर तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

मैंने अपने वैज्ञानिक कार्यों एवं प्रस्तुतियों में यथासंभव हिंदी के प्रयोग का प्रयास किया है। मेरा अनुभव रहा है कि जब वैज्ञानिक विषयों को सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किया जाता है, तो उन्हें समझने और आत्मसात करने में विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा समाज के विभिन्न वर्गों को सुविधा होती है।

प्रारंभिक स्तर पर वैज्ञानिक समुदाय में हिंदी में वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण को लेकर कुछ जिज्ञासा अवश्य रहती है, क्योंकि विज्ञान की अधिकांश सामग्री परंपरागत रूप से अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध रही है। किंतु समय के साथ सहकर्मियों एवं वैज्ञानिकों ने इस पहल को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया है। वे इसे वैज्ञानिक ज्ञान को अधिक सुलभ बनाने और भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास के रूप में देखते हैं।

मेरा विश्वास है कि हिंदी में वैज्ञानिक लेखन एवं प्रस्तुतीकरण को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास, गुणवत्तापूर्ण वैज्ञानिक सामग्री और वैज्ञानिक समुदाय की सहभागिता आवश्यक है। विज्ञान की भाषा ऐसी होनी चाहिए, जो ज्ञान के प्रसार में सहायक बने और अधिक से अधिक लोगों को उससे जोड़ सके।

प्रश्न-5. आपके विचार में हिंदी में वैज्ञानिक शोध-पत्रों के लेखन एवं प्रस्तुतीकरण को व्यापक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए किन पहलुओं पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है?

उत्तर: मेरा मानना है कि हिंदी में वैज्ञानिक शोध-पत्रों के लेखन एवं प्रस्तुतीकरण को व्यापक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए सर्वप्रथम वैज्ञानिकों में यह विश्वास विकसित करना आवश्यक है कि हिंदी भी वैज्ञानिक अभिव्यक्ति की एक सक्षम, प्रभावी एवं समृद्ध भाषा है। इसके लिए वैज्ञानिक

एवं तकनीकी शब्दावली को सरल, मानकीकृत तथा सहज रूप में उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि शोधकर्ता बिना किसी संकोच के हिंदी में वैज्ञानिक लेखन कर सकें। साथ ही, वैज्ञानिक लेखन से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए। हिंदी में उत्कृष्ट शोध-पत्रों को प्रकाशन, प्रस्तुतीकरण तथा सम्मान के उपयुक्त अवसर प्रदान करने से भी वैज्ञानिकों का उत्साहवर्धन होगा।

इसी दिशा में हमारे संस्थान के वैज्ञानिकों की सक्रिय सहभागिता उल्लेखनीय रही है। दिनांक 30.07.2024 से 31.07.2024 तक सीएसआईआर-एएमपीआरआई, भोपाल (मध्यप्रदेश) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन में संस्थान के डॉ. प्रवीण कुमार अतुल (वैज्ञानिक-एफ), डॉ. प्रवीण भारती (वैज्ञानिक-एफ), डॉ. हिम्मत सिंह (वैज्ञानिक-ई), डॉ. रजनीकांत दीक्षित (वैज्ञानिक-ई) तथा डॉ. वंदना शर्मा (सहायक निदेशक, राजभाषा) ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। सम्मेलन में डॉ. रजनीकांत दीक्षित एवं डॉ. वंदना शर्मा को उनके शोध-पत्रों के लिए शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया, जो हिंदी में वैज्ञानिक लेखन एवं प्रस्तुतीकरण को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक प्रेरणादायी उपलब्धि है।

इसके अतिरिक्त, यदि वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संस्थान प्रमुख स्वयं हिंदी में वैज्ञानिक लेखन एवं प्रस्तुतीकरण को अपनाएँ, तो यह अन्य वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा। विज्ञान का मूल उद्देश्य ज्ञान का व्यापक प्रसार है, और यदि वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हिंदी जैसी व्यापक जनभाषा में भी उपलब्ध हों, तो उनका लाभ शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा समाज के अधिक व्यापक वर्ग तक पहुँच सकेगा। अतः इस दिशा में संस्थागत, नीतिगत एवं व्यक्तिगत स्तर पर निरंतर और समन्वित प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

प्रश्न-6. संस्थान के निदेशक के रूप में आप अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए किस प्रकार प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हैं?

उत्तर: मेरा मानना है कि किसी भी संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन केवल निर्देशों से नहीं, बल्कि प्रेरणा, सहभागिता और सकारात्मक कार्य-प्रणाली के माध्यम से संभव होता है। संस्थान के निदेशक के रूप में मेरा प्रयास रहता है कि अधिकारी, वैज्ञानिक एवं कर्मचारी हिंदी को केवल एक दायित्व के रूप में न देखकर अपने कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के एक माध्यम के रूप में अपनाएँ।

इस दिशा में मैं स्वयं अपने प्रशासनिक कार्यों, बैठकों, प्रस्तुतियों एवं अन्य उपयुक्त अवसरों पर हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता देने का प्रयास करता हूँ, ताकि सभी के लिए एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत हो सके। इसके अतिरिक्त, संस्थान में राजभाषा संबंधी कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, हिंदी पखवाड़ा एवं विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

वैज्ञानिकों को भी शोध-पत्रों, वैज्ञानिक प्रस्तुतियों तथा जनसंचार से संबंधित गतिविधियों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। मेरा विश्वास है कि किसी भी भाषा का विकास उसके प्रयोग से ही होता है। यदि हम सभी अपने दैनिक कार्यों में सहज रूप से हिंदी का उपयोग करेंगे, तो राजभाषा हिंदी संस्थान की कार्य-प्रणाली का स्वाभाविक हिस्सा बन जाएगी।

प्रश्न-7. अंत में, आप संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए क्या प्रेरणात्मक संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर : मेरा सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि वे राजभाषा हिंदी को केवल एक औपचारिक दायित्व के रूप में न लेकर अपने दैनिक कार्यों का स्वाभाविक हिस्सा बनाएं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह हमारे ज्ञान, विचारों और कार्यों को व्यापक समाज तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी होती है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि हम प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक गतिविधियों, शोध-पत्र प्रस्तुतियों एवं जनसंचार के क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाएंगे, तो इससे हिंदी में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार को नई दिशा मिलेगी।

मैं सभी से अपेक्षा करता हूँ कि वे हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए इसे सीखने और प्रयोग करने का निरंतर प्रयास करें। छोटे-छोटे प्रयासों से ही बड़े परिवर्तन संभव होते हैं। मेरा विश्वास है कि संस्थान का प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी दैनिक कार्यालयीन कार्यशैली में हिंदी को स्थान देकर राजभाषा के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को ज्ञान-विज्ञान और अनुसंधान की प्रभावी भाषा बनाने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें और राष्ट्र की भाषायी समृद्धि में सहभागी बनें।

∞

कर्मचारियों का पन्ना

एक जमाना हमारा भी था....

रघुबर दत्त
एल ए-II
हिन्दी अनुभाग, एनआईएमआर, नई दिल्ली

"एक ज़माना हमारा भी था..." यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि यादों का वह अनमोल खज़ाना है, जो बीते हुए सुनहरे दिनों की कहानी सुनाता है। समय बदलता है, लोग बदलते हैं और जीवन की रफ्तार भी बदल जाती है, लेकिन यादें कभी पुरानी नहीं होतीं। एक समय था, जब जीवन में दिखावे से अधिक अपनापन और रिश्तों में सच्ची मिठास होती थी। पड़ोसियों के घर बिना किसी औपचारिकता के चले जाना सामान्य बात थी और घंटों बैठकर सुख-दुख बाँटे जाते थे। त्योहार केवल मनाए नहीं जाते थे, बल्कि पूरे मोहल्ले के लोग मिल-जुलकर उत्साह और उल्लास के साथ इन क्षणों को जीते थे। उस समय बच्चों की दुनिया मोबाइल और इंटरनेट तक सीमित नहीं थी। वे खुले मैदानों में दौड़ते-भागते, पेड़ों पर चढ़ते और गिल्ली-डंडा, कबड्डी, कंचे तथा लंगड़ी जैसे पारंपरिक खेल पूरे उत्साह से खेलते थे। उन खेलों में हार-जीत से कहीं अधिक महत्त्व साथ खेलने, हँसने-मुस्कुराने और मित्रता के आनंद का होता था। वर्षात के दिनों में तालाबों, पोखरों एवं नदियों में कागज की नाव बनाकर पानी में तैराने का आनंद कुछ और ही होता था।

कभी-कभी मन में बचपन के वे सुनहरे दिन कौंध उठते हैं। तब यह विचार आता है कि यदि उस समय की बातें आज की पीढ़ी के बच्चों के सामने रखी जाएँ, तो क्या वे उन अनुभवों पर विश्वास भी कर पाएँगे? उस दौर की परिस्थितियाँ और आज के बदलते जीवन के बीच का अंतर इतना व्यापक है कि मन स्वयं ही आश्चर्य से भर उठता है। उस समय हमारी दिनचर्या बिल्कुल अलग थी। हमें प्रतिदिन 5-7 किलोमीटर पैदल ही स्कूल जाना पड़ता था। आज जैसी पक्की सड़कें और आधुनिक सुविधाएँ नहीं थीं। पहाड़ों के ऊबड़-खाबड़ रास्तों से होकर हम स्कूल पहुँचते थे। माता-पिता हमें निश्चिंत होकर स्कूल भेज देते थे। उनके मन में किसी अनहोनी का भय नहीं होता था, क्योंकि उस समय का सामाजिक वातावरण अधिक सुरक्षित, आत्मीय और विश्वास से भरा हुआ था।

पढ़ाई में भी प्रतिस्पर्धा का स्वरूप आज जैसा नहीं था। हमें केवल इतना पता होता था कि पास होना है या फेल। अंकों के प्रतिशत और रैंक की होड़ से हमारा कोई परिचय नहीं था। प्रथम, द्वितीय या तृतीय श्रेणी प्राप्त करना ही गर्व और उत्सव का विषय होता था और परिवार तथा शिक्षक उसी उपलब्धि पर प्रसन्न होकर हमारा उत्साहवर्धन करते थे। उस समय पढ़ाई के लिए घरों में बिजली की सुविधा प्रायः नहीं होती थी। हम चिराग, लैम्प या लालटेन की रोशनी में पढ़ाई करते थे। हमारी भावनाएं इतनी मासूम

थी कि हमें लगाता था कि किताबों में पीपल का पत्ता या मोरपंख रखने से बुद्धि तेज़ होती है और पढ़ाई में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। कपड़े की थैली या बस्ते में किताबों और कॉपियों को सलीके से जमाकर रखना भी एक कला थी, जिसमें हम निपुण थे। उस दौर में सुविधाएँ भले ही सीमित थीं, लेकिन संतोष और अपनापन कहीं अधिक था। अपनों की चिट्ठियों का बेसब्री से इंतज़ार रहता था, रेडियो पर गीत सुनने का अपना ही अलग आनंद था और परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करते थे। बड़े-बुज़ुर्गों का सम्मान करना जीवन का संस्कार था और उनके अनुभव तथा सीख को परिवार की सबसे बड़ी पूँजी माना जाता था।

हर वर्ष जब नई कक्षा शुरू होती थी, तो सबसे पहले नई किताबों और कॉपियों पर रद्दी कागज़ की जिल्द चढ़ाई जाती थी। यह काम किसी वार्षिक उत्सव से कम नहीं लगता था। पूरे उत्साह और लगन के साथ हम अपनी पुस्तकों को सहेजते और बस्ते को बड़े करीने से जमाते थे। शैक्षणिक वर्ष समाप्त होने पर पुरानी किताबें बेच देना और अगली कक्षा के लिए पुरानी किताबें खरीद लेना एक सामान्य बात थी। इसमें न तो हमें किसी प्रकार की झिझक होती थी और न ही शर्म का कोई भाव।

उस समय माता-पिता या अभिभावकों को हमारी पढ़ाई का आर्थिक बोझ उतना नहीं उठाना पड़ता था। हमारा अधिकांश समय घर से स्कूल और स्कूल से घर आने-जाने में ही बीत जाता था। जो समय बचता, उसमें हम घर के छोटे-बड़े कामों में हाथ बँटाते थे। यही उस समय के अधिकांश बच्चों की स्वाभाविक दिनचर्या थी, जिसमें जिम्मेदारी, अनुशासन और परिवार के प्रति अपनापन सहज रूप से विकसित होता था। स्कूल में शिक्षकों से डाँट खाना, कभी-कभी उनकी डाँट-फटकार या दंड का सामना करना, मुर्गा बनना और कान मरोड़े जाना उस समय की सामान्य बात मानी जाती थी। सच कहें तो उस दौर में *ईगो* (अहं) जैसी बातों से हमारा कोई परिचय ही नहीं था। घर हो या स्कूल, बड़ों की डाँट-फटकार को हम जीवन का स्वाभाविक हिस्सा समझते थे। अगले ही दिन सब कुछ सामान्य हो जाता था; न मन में कोई कटुता रहती थी और न ही रिश्तों में कोई दूरी आती थी। बच्चों के बीच तो यह भी मज़ाक का विषय बन जाता था कि आज कल की तुलना में कम डाँट पड़ी।

बिना जूते-चप्पलों के, लकड़ी के बल्ले और किसी भी तरह की गेंद से गली-मोहल्लों या मैदानों में घंटों क्रिकेट खेलना, कंचे खेलना, गिल्ली-डंडा खेलना और धूल-मिट्टी में मस्ती करना जिस आनंद से भर देता था, उसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त करना आज भी कठिन है। वही सरलता, वही बेफिक्री और वही अपनापन हमारे बचपन की सबसे अनमोल पूँजी थी। हमने कभी पॉकेट मनी की माँग नहीं की और न ही पिताजी ने उसे देने की आवश्यकता महसूस की। इसलिए हमारी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ भी बहुत छोटी और सीमित थीं। वर्ष में कभी-कभार कोई मनपसंद चीज़ खाने को मिल जाती, तो वही हमारे लिए किसी बड़े उत्सव से कम नहीं होती थी। छोटी-सी खुशी भी हमें अपार संतोष दे जाती थी। हमारी छोटी-मोटी ज़रूरतें परिवार का कोई-न-कोई सदस्य सहज ही पूरी कर देता था, क्योंकि उस समय अधिकांश परिवार संयुक्त हुआ करते थे। रिश्तों में अपनापन था और एक-दूसरे का सहारा बनना जीवन का स्वाभाविक हिस्सा था।

दीपावली पर पटाखों की पूरी की पूरी लड़ को एक साथ जलाने के बजाय उसे खोलकर एक-एक पटाखा फोड़ने में भी हमें उतना ही आनंद आता था। सीमित साधनों के बीच भी हम हर छोटी-सी खुशी को पूरे मन से जी लेते थे। शायद यही कारण था कि अभाव होते हुए भी जीवन में संतोष, अपनापन और सच्ची प्रसन्नता की कोई कमी नहीं थी। हम कभी अपने माता-पिता से यह कह ही नहीं पाए कि हम उनसे कितना प्रेम करते हैं, क्योंकि उस समय हमें *"आई लव यू"* कहना नहीं आता था। हमारे लिए प्रेम शब्दों से नहीं, बल्कि सम्मान, आज्ञाकारिता और अपनेपन से व्यक्त होता था। आज जीवन के असंख्य संघर्षों और अनुभवों से गुजरते हुए हम इस विशाल दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा बन गए हैं। किसी को उसकी मनचाही मंज़िल मिल गई, तो किसी की कुछ इच्छाएँ अधूरी ही रह गईं। समय ने सबको अपनी-अपनी राह पर आगे बढ़ा दिया।

आज भी याद आता है कि स्कूल की डबल या ट्रिपल सीट वाली साइकिल पर दोस्तों के साथ घूमना कितना आनंददायक होता था। स्कूल के बाहर हाफ पैंट पहने हम दोस्तों के साथ चूरन की गोलियाँ और टॉफ़ियाँ खरीदते, कभी कोई दोस्त खिलाता तो कभी कोई और। उन छोटी-छोटी खुशियों में जो अपनापन और मिठास थी, वह आज भी स्मृतियों में वैसी ही ताज़ा है। न जाने वे दोस्त कहाँ बिछड़ गए और वह चूरन-टॉफ़ी बेचने वाली छोटी-सी दुकान भी कहाँ खो गई। समय सब कुछ अपने साथ बहा ले गया, लेकिन उनकी यादें आज भी मन के किसी कोने में मुस्कुराती रहती हैं।

आज तकनीक ने जीवन को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सरल, सुविधाजनक और तेज़ बना दिया है। फिर भी, कहीं-न-कहीं रिश्तों की वह आत्मीय गर्माहट और अपनापन कम होता दिखाई देता है। आमने-सामने की लंबी बातचीत का स्थान अब संदेशों ने ले लिया है और आत्मीय मुलाकातों की जगह वीडियो कॉल ने। सुविधाएँ तो बढ़ी हैं, लेकिन समय, संवेदनाएँ और रिश्तों की सहज निकटता मानो धीरे-धीरे पीछे छूटती जा रही है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि आज का समय बेहतर नहीं है। प्रत्येक युग की अपनी अलग विशेषताएँ, चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ होती हैं। वर्तमान हमें नई तकनीक, नए अवसर और असीम संभावनाएँ प्रदान करता है, जबकि अतीत हमें सादगी, संतोष, आत्मीयता और मानवीय मूल्यों का महत्व सिखाता है।

इसलिए अपने बीते हुए समय पर गर्व करना चाहिए, उसकी मधुर स्मृतियों को संजोकर रखना चाहिए और साथ ही वर्तमान को भी सकारात्मक सोच, खुले मन और उत्साह के साथ अपनाना चाहिए। यही अतीत के अनुभवों और वर्तमान की संभावनाओं के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित करने का सर्वोत्तम मार्ग है। हम आज दुनिया के किसी भी कोने में रहें, लेकिन यह सत्य है कि हमारा बचपन वास्तविक दुनिया में बीता है। हमने जीवन को किताबों या स्क्रीन पर नहीं, बल्कि अपने अनुभवों से जाना और वास्तविक परिस्थितियों का सामना करते हुए जीना सीखा। कपड़ों में सलवटें न पड़ें या रिश्तों में अनावश्यक औपचारिकताओं का निर्वाह करना—इन बातों का हमें कभी विशेष ज्ञान नहीं था। हमारे लिए सादगी ही जीवन का स्वाभाविक रूप थी। सुबह का भोजन, दोपहर का टिफिन और रात का खाना जैसी

आज की जीवनशैली से भी हम परिचित नहीं थे। घर से जो भोजन मिला, उसी में संतोष था और वही हमारे लिए पर्याप्त था।

हमने कभी अपने भाग्य को दोष नहीं दिया। जो मिला, उसे प्रसन्नता और कृतज्ञता के साथ स्वीकार किया। अभावों में भी आनंद ढूँढ़ना और छोटी-छोटी खुशियों में संतोष पाना ही हमारे जीवन का सबसे बड़ा धन था। शायद यही सोच आज भी हमें हर परिस्थिति में मुस्कराते हुए जीने की प्रेरणा देती है। निस्संदेह, हमने जो जीवन जिया, उसकी सरलता, आत्मीयता और संतोष की तुलना आज के समय से करना संभव नहीं है। वह एक अलग ही दौर था—साधनों से भले ही सीमित, लेकिन मानवीय मूल्यों, अपनत्व और सच्ची खुशियों से भरपूर था ।

हम अच्छे थे या बुरे, यह तो नहीं मालूम पर इतना जरुर है कि.... एक जमाना हमारा भी था।

∞

संस्थान की गतिविधियां

• संस्थान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करने की दिशा में कार्यशालाओं का आयोजन अत्यंत प्रभावी कदम है। इसी को ध्यान में रखते हुए संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और कार्यालयी कामकाज में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने के लिए दिनांक 13.03.2026 को पूर्वाह्न 11.00 बजे सम्मेलन कक्ष में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

संबंधित कार्यशाला संस्थान के नव-नियुक्त अवर श्रेणी लिपिक, प्रवर श्रेणी लिपिक एवं डाटा एंट्री आपरेटरों हेतु आयोजित की गई, जिसमें व्याख्याता के रुप में स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के श्री राजीव सक्सेना, अवर सचिव को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का विषय था "राजभाषा अधिनियम और सरकारी कामकाज में हिंदी"। कार्यशाला में श्री राजीव सक्सेना जी ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में संबंधित विभिन्न नियमों एवं अधिनियमों पर विस्तृत एवं रोचक जानकारी दी। संबंधित कार्यशाला में 2 अधिकारियों एवं 24 कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी कार्यशाला में भाग लेते हुए संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी

व्याख्यान देते हुए श्री राजीव सक्सेना, अवर सचिव

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट के दस सफल संस्करणों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए, गुजरात सरकार वाइब्रेंट द्वारा गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) का आयोजन किया गया। यह आयोजन राज्य भर में किया जा रहा है, जो शिखर सम्मेलन के सफल मॉडल को क्षेत्रीय स्तर पर दोहरा रहा है। वाइब्रेंट गुजरात के दो लगातार संस्करणों के बीच आयोजित होने वाले ये सम्मेलन क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को बढ़ावा देंगे, क्षेत्र-विशिष्ट निवेशों को आकर्षित करेंगे और वैश्विक जुड़ाव को मजबूत करेंगे, जो विकसित भारत @2047 के विज़न के अनुरूप है।

- आईसीएमआर-एनआईवी के परिसर में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम शुरु किया गया। यह एक दिवसीय पाठ्यक्रम राष्ट्रीय कर्मयोगी होने के मूल मूल्यों पर केंद्रित था जिसमें राष्ट्र, विभाग, नागरिक और स्वयं के प्रति कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता रखने वाले व्यक्ति शामिल थे। इस पाठ्यक्रम में टीम चर्चा, व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करना और समूह गतिविधियाँ शामिल थीं जिनसे वास्तविक जीवन की विभिन्न स्थितियों में चिंतन, सहयोग और सामूहिक समस्या-समाधान को बढ़ावा मिलता था।

- आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान परिसर में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम शुरु किया गया जिसका लक्ष्य सरकारी कर्मचारियों को अधिक कुशलता से काम करने, नैतिक रूप से व्यवहार करने और व्यावहारिक प्रशिक्षण और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से नागरिकों की बेहतर सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

- दिनांक 10 जनवरी से दिनांक 15 जनवरी 2026 तक गुजरात, राजकोट में आईसीएमआर डेस्क, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, एनआईवी, एनआईओएच और वन हेल्थ के साथ जीवंत प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- जनवरी माह के दौरान, आईसीएमआर- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान परिसर में पीएचडी प्रशिक्षण कार्यक्रम चिकित्सा संकाय के लिए डीएचआर-एचआरडी के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारत के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर-एचआरडी) के अंतर्गत पीएचडी कार्यक्रम भारत के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की मानव संसाधन विकास योजना (डीएचआर) का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य युवाओं को जैव चिकित्सा अनुसंधान में पीएचडी करने के लिए प्रेरित करना है।

- सीएचसी अंगारा, रांची में श्री एचआरयू अंगारा द्वारा स्तन कैंसर की स्व-जांच प्रशिक्षण का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य जमीनी स्तर पर शीघ्र पहचान और जागरूकता को मजबूत करना था।

- आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, सम्मेलन कक्ष में कर्मयोगी विशाल स्केल जन सेवा भाव प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसका उद्देश्य अधिकारी में जनसेवा भाव पैदा करना है।

- दिनांक 21 जनवरी, 29 जनवरी एवं 9 फरवरी 2026 को राष्ट्रीय कर्मयोगी-जनसेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय आई गॉट प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत चार मॉड्यूल रखे गए (1.राष्ट्रीय कर्मयोगी कौन है? 2.सफलता और पूर्णता की दृष्टि को विस्तार देना, 3. कर्मयोगीजनों का निर्माण करना, 4. राष्ट्रीय-निर्माण के रुप में राष्ट्रीय कर्मयोगी आदि थे।

- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रायपुर को माननीय मंत्री श्रीमती कमलेश जांगड़े द्वारा मेगा प्रदर्शनी प्रगतिशील छत्तीसगढ़ 2026 में बैस्ट स्टॉल अवार्ड से सम्मानित किया गया।

- आईसीएमआर स्टॉल में साइनिंग उत्तराखंड़ 2026 हल्द्वानी में प्रशंसा पत्र प्राप्त किया।

- आईपीओ-आईसीएमआर सहयोगात्मक वैज्ञानिक प्रशिक्षण चिकित्सा नवाचार पेटेंट मित्र पहल के अंतर्गत एक सुव्यवस्थित सूचना अधिकार प्राधिकरण (आईपीआर) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य जैव चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में पेटेंट पहचान, मसौदा तैयार करने और अभियोग चलाने में संस्थागत क्षमता को बढ़ाना था। भारतीय पेटेंट कार्यालय, आईसीएमआर के अधिकारियों और पेटेंट पेशेवरों द्वारा आयोजित विशेषज्ञ सत्रों में भारतीय पेटेंट अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों, फाइलिंग और परीक्षा प्रक्रियाओं, जैविक आविष्कारों के लिए पेटेंट मसौदा तैयार करने पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों की बहुमूल्य संपदा प्रबंधन और अनुसंधान को पेटेंट योग्य नवाचारों में बदलने की समझ को मजबूत किया।

- आईसीएआर-आईवीआरआई(ICAR-IVRI) बरेली में मलेरिया अनुसंधान और प्रमुख इन विवो प्रणालियों की अनुकूलता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण मलेरिया अनुसंधान में प्रयुक्त प्रमुख इन विवो मॉडल बकृंतक, प्राइमेट, पक्षी) का अध्ययन करने के लिए एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम मानव रोग विकृति विज्ञान और दवा परीक्षण के साथ उनकी अनुकूलता का आकलन, विधियों का सत्यापन, सीमाएँ और नैतिक विचार के लिए लाभदायक रहा। भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संघ द्वारा संस्थान के डॉ. प्रवीण कुमार अतुल को प्रयोगशाला पशु विज्ञान में उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया।

- मार्च माह के दौरान, आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान द्वारा रेडिसन ब्लू द्वारका, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय मलेरिया सम्मेलन (IMC) 2026, आयोजित किया गया, जिसका विषय था "खोज, विकास और वितरण: मलेरिया उन्मूलन और उससे आगे की दिशा में प्रगति'। यह सम्मेलन आईसीएमआर के प्रमुख क्षेत्रों- "खोज, विकास और वितरण" पर केंद्रित रहा। कई देशों में मलेरिया नियंत्रण और उन्मूलन कार्यक्रम चल रहे हैं, ऐसे में इस कार्यक्रम द्वारा दिए गए मंच ने सभी हितधारकों को उन्मूलन कार्यक्रम के महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े देशों के व्यापक लाभ के लिए इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में हुई प्रगति को साझा करने का अवसर प्रदान किया। इस सम्मेलन में महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान किया जाने के साथ ही, आवश्यक सहयोग को बढ़ावा दिया गया और मलेरिया से निपटने के लिए जैव प्रौद्योगिकी नवाचारों के अनुप्रयोग को गति प्रदान की गई। आईसीएमआर- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित यह आईएमसी, 2030 तक मलेरिया मुक्त भारत के लिए नवीनतम वैज्ञानिक और परिचालन समाधानों के साथ उन्मूलन कार्यक्रमों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से चल रहे राष्ट्रीय प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय इकाई नड़ियाद, गुजरात द्वारा गुजरात राज्य के पच्चीस प्रयोगशाला प्रौद्योगिकीविदों को मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

- दिनांक 19 मार्च 2026 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में पूर्वाहन 11 बजे संस्थान के समस्त स्टाफ हेतु एनपीएस जागरुकता सत्र आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों को राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के बारे में जागरुकता प्रदान करना था। संबंधित कार्यशाला एक्सीज़ बैंक के प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित की गई, जिसमें सेवा-निवृत्ति पश्चात् योजना, एनपीएस संरचना, लाभ, निवेश, विकल्प, कर लाभ एवं संबंधित पहलुओं पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस सत्र का लक्ष्य राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के बारे में कर्मचारियों की जानकारी में वृद्धि करना, ताकि वे सेवा-निवृत्ति योजना एवं वित्तीय सुरक्षा के संबंध में उचित निर्णय ले सकें।

∞

- **आईसीएमआर ने अगली पीढ़ी के अनुसंधान प्रमुखों को आगे बढ़ाने के लिए संवाद (SANVAD) 2026 का आयोजन किया।**

(तीन दिवसीय सम्मेलन ने उच्च गुणवत्ता वाले डॉक्टरेट अनुसंधान, नवाचार और सहयोगात्मक ज्ञान आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) के अंतर्गत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने 19 से 21 फरवरी 2026 तक आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एनआईएमआर), नई दिल्ली में संवाद 2026 (स्कॉलर्स असेंबली फॉर नेक्स्ट जेन वेंचर्स टू एडवांस देयर डेवलपमेंट) का आयोजन किया।

संवाद आईसीएमआर की एक वार्षिक पहल है। यह बारी-बारी से आयोजित किए जाने वाला एक राष्ट्रीय सम्मेलन है। इसका आयोजन हर साल आईसीएमआर के विभिन्न संस्थानों द्वारा किया जाता है। इसका उद्देश्य नेटवर्क में डॉक्टरेट शोधार्थियों के साथ निरंतर जुड़ाव को बढ़ावा देना है। अपने संगठन का विस्तार करके, यह पहल संस्थागत सहयोग को मजबूत करती है और विविध अनुसंधान प्रणालियों के प्रति जागरुकता बढ़ाती है। आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान में पहले संस्करण के सफल आयोजन के बाद, संवाद का 2027 संस्करण आईसीएमआर-राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित किया जाएगा।

संवाद का उद्देश्य डॉक्टरेट अनुसंधान अध्ययनों की गुणवत्ता में सुधार करना, युवा शोधकर्ताओं को उत्कृष्टता के लिए प्रेरित करना और भारत के राष्ट्रीय ज्ञान तंत्र को मजबूत करना है। यह मंच आईसीएमआर के पीएचडी छात्रों के बीच डॉक्टरेट की गंभीरता, अनुसंधान क्षमता, नवाचार उन्मुखीकरण और नेतृत्व तत्परता को बढ़ाता हैं, साथ ही शिक्षा, उद्योग और नीति जगत के अग्रणी विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग, सहयोग और सार्थक संवाद के लिए संरचित अवसर प्रदान करता हैं। संवाद 2026 तीन दिवसीय कार्यक्रम, में देश भर से लगभग 400 डॉक्टरेट छात्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक, नीति निर्माता, शिक्षाविद और अनुसंधान नेता एक साथ आए।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट और प्रतिष्ठित वक्ताओं ने भाग लिया। पद्म श्री प्रोफेसर अनिल कुमार गुप्ता, जो हनी बी नेटवर्क, सृष्टि, ज्ञान और एनआईएफ के संस्थापक हैं, ने विद्वानों को सामाजिक आवश्यकताओं और जमीनी स्तर पर नवाचार पर आधारित अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित किया। अनुसंधान में नवाचार, सामाजिक आवश्यकताओं और उद्योग की तत्परता को जोड़ना विषय पर सत्र में, कम्युनिटी एम्पावरमेंट लैब के संस्थापक डॉ. विश्वजीत कुमार ने ज्ञान को ठोस सामुदायिक प्रभाव में बदलने पर जोर दिया। नैदानिक अनुसंधान पर एक प्रभावशाली सत्र में, पद्म श्री प्रोफेसर कामेश्वर प्रसाद

ने सार्थक स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रयोगशाला और रोगी के बीच समन्वय स्थापित करने पर महत्व दिया।

स्वास्थ्य संचार- प्रभाव के लिए विज्ञान विषय पर आयोजित तकनीकी सत्र एक प्रमुख आकर्षण था। इन चर्चाओं में इस बात पर जोर दिया गया कि अनुसंधान नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए, जनविश्वास बढ़ाए और समुदायों तक प्रभावी ढंग से पहुंचे। सत्र में इस बात पर बल दिया गया कि प्रभावशाली अनुसंधान प्रकाशन के साथ समाप्त नहीं होता, इसे नीति, व्यवहार और सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए रणनीतिक, स्पष्ट और प्रेरक तरीके से बताया जाना चाहिए।

अंतिम दिन स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल के साथ एक बहुप्रतीक्षित टाउन हॉल का आयोजन किया गया। इस संवादात्मक चर्चा में विज्ञान-नीति संबंधों, अनुसंधान वित्तपोषण की स्थिति और युवा शोधकर्ताओं के लिए उभरते अवसरों पर विचार-विमर्श किया गया। उन्होंने जोर देते हुए कहा, "मैं विद्वानों से आग्रह करता हूं कि वे गंभीर और सार्थक अनुसंधान करें और जिसे मैं 'औपचारिक अनुसंधान कहता हूँ, उससे बचें। मैं आपको न्यूनतम पीएचडी आवश्यकताओं से आगे बढ़कर उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्र लिखने में स्वेच्छा से योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। दबाव और तनाव में अंतर होता है और शोधकर्ताओं को दोनों से रचनात्मक रुप से प्रबंधन करना सीखना चाहिए"।

डॉ. केयूर पारेख, डॉ. कविता सिंह, प्रो. मनोज धर और डॉ. नीरु सैनी सहित उद्योग और अकादमिक प्रमुखों ने वैश्विक स्वास्थ्य अनुसंधान, फार्मास्युटिकल नवाचार, अंत:विषय सहयोग और विविध कैरियर मार्गों के बारे में मूल्यवान विचार प्रकट किए।

व्यवस्थित समीक्षा और साक्ष्य संश्लेषण, राष्ट्रीय अनुसंधान संसाधन (एनएएमएस, ओएनओएस, इन्फ्लबनेट) और "पीएच.डी. के बाद क्या? करियर के रास्ते और विकल्प" जैसे विषयों पर आयोजित तकनीकी सत्रों ने विद्वानों को अकादमिक, उद्योग और नीतिगत क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए व्यावहारिक माध्यम प्रदान किए। इन सत्रों ने राष्ट्रीय अनुसंधान सहायता प्रणालियों के बारे में जागरुकता और उनके उपयोग को भी मजबूत किया, जिससे जानकार और भविष्य के लिए तैयार शोधकर्ताओं को प्रोत्साहन मिला।

विद्वानों ने "mindstorm@ICMR" रिसर्च क्विज 2026 में उल्लेखनीय उत्साह और बौद्धिक जोश के साथ भाग लिया, साथ ही मौखिक और पोस्टर प्रस्तुति सत्रों में भी हिस्सा लिया। इन मंचों ने न केवल विभिन्न संस्थानों में डॉक्टरेट अनुसंधान की गहराई और विविधता को प्रदर्शित किया, बल्कि सहकर्मी शिक्षण, विशेषज्ञ प्रतिक्रिया और अंतरविषयक सहयोग के अवसर भी प्रदान किए, जिससे यह सम्मेलन वैज्ञानिक अनुसंधान और अकादमिक उत्कृष्टता का एक सजीव समारोह बन गया।

अपने समापन भाषण में, आईसीएमआर-एनआईएमआर के निदेशक डॉ. अनुप अन्वीकर ने शोधार्थियों के समर्पण और विद्वतापूर्ण उत्कृष्टता की सराहना की। उन्होंने कहा, "मैं संवाद 2026 को एक विशिष्ट और दूरदर्शी मंच के रुप में देखता हूँ जो पीएचडी शोधार्थियों के बीच सार्थक शोध नेटवर्किंग, अंत:विषय संवाद और सहयोगात्मक विकास को बढ़ावा देता हैं। मुझे आशा है कि आने वाले वर्षों में इसी तरह की पहल को अन्य आईसीएमआर संस्थानों में भी अपनाया और संस्थागत रुप दिया जाएगा, जिससे राष्ट्रीय अनुसंधान तंत्र मजबूत होगा और वैज्ञानिक नेताओं की अगली पीढ़ी का विकास होगा"।

सम्मेलन का समापन एक विदाई सत्र और पुरस्कार समारोह के साथ हुआ, जिसमें उत्कृष्ट शोध प्रस्तुतियों और विद्वतापूर्ण योगदानों को सम्मानित किया गया।

संवाद (SANVAD) 2026
#SANVAD 2026

• स्वच्छता दिवस का आयोजन

जैसा कि संस्थान के पूरे परिसर में स्वच्छता अभियान सुचारू रूप से चलाया जा रहा है। हाल ही में स्वच्छता पखवाड़ा परिसर के अंदर और बाहर दोनों तरफ की सफाई के साथ संपन्न हुई। परिसर में जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गईं और द्वारका क्षेत्र के सेक्टर 10 स्थित आरपीवीवी स्कूल के साथ सामुदायिक/पड़ोस जागरूकता अभियान भी चलाया गया। 15 दिनों के दौरान लगभग 1000 अधिकारियों/कर्मचारियों/छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रथम दिवस 1 अप्रैल से 15 अप्रैल 2026 तक संस्थान में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। 1अप्रैल 2026 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में सभी अधिकारियों/ वैज्ञानिकों/ तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मचारियों ने स्वच्छता शपथ ग्रहण की।

द्वितीय दिवस संस्थान के गेट नं.-1 में श्रमदान गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के आईटी प्रभाग, आईईसी प्रभाग, इंजीनियरिंग प्रभाग, हिंदी अनुभाग, निदेशक कार्यालय एवं प्रशासनिक सचिवालय ने भाग लिया और गेट नं.-1 के आस-पास लॉन एवं बेसमैंट एरिया में सफाई की। इसके साथ ही, डॉ. रजनीकांत दिक्षित ने स्वच्छता की महत्ता पर लघु व्याख्यान भी प्रस्तुत किया। इसी क्रम में गेट नं.-1 पर दिनांक 6 अप्रैल को सेल्फी प्वांइट स्थापित किया और संस्थान के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने सेल्फी ली।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों की झलक

दिनांक 7 अप्रैल 2026 को गेट नं.1 के लॉन के पास पौधारोपण अभियान गतिविधि आयोजित की गई, जिसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा किया गया एवं इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

स्वच्छता पखवाड़ा 2026 की गतिविधियों के भाग के रुप में “एक वेस्ट टू आर्ट प्रदर्शनी” का आयोजन भी किया गया था, जिसके अंतर्गत पुनर्नवीनीकरण/अपशिष्ट सामग्री से बने रचनात्मक मॉडलों का प्रदर्शन किया गया। दिनांक 7 मई 2026 को डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सीएम श्री स्कूल, द्वारका में पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और छात्रों को विश्व स्वास्थ्य दिवस पर एक व्याख्यान दिया गया। तत्पश्चात् एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया। संबंधित स्कूल के छात्रों द्वारा स्वच्छता पर एक नाटक भी प्रस्तुत किया और डॉ.बी.आर. अम्बेडकर सीएम स्कूल, द्वारका में सामुदायिक जागरुकता और स्वच्छता अभियान चलाया गया जिसमें सफाई कर्मचारियों के लिए एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया एवं विजेता छात्रों को नोडल अधिकारी द्वारा सराहा गया और पुरस्कार दिए गए तथा संस्थान में स्वच्छता और स्वच्छता में योगदान के लिए संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा सफाई कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों की झलक

∞

• संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आईडीवाई) की शुरुआत वर्ष 2015 में हुई। तब से अब तक यह संयुक्त राष्ट्र प्राधिकृत सालाना आयोजन से बढ़ कर दुनिया के सबसे बड़े सहभागी आरोग्य आंदोलनों में से एक बन गया है। यह साझा योगाभ्यास के जरिए विभिन्न देशों, संस्कृतियों और समुदायों के लाखों लागों को एकजुट करता है। वर्ष 2026 के आईडीवाई की थीम "स्वस्थ आयु के लिए योग" है।

संयुक्त राष्ट्र ने इसके सार्वभौमिक आकर्षण और लाभों को मान्यता देते हुए वर्ष 2014 में दिनांक 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। पहला आईडीवाई दिनांक 21 जून 2015 को मनाया गया। यूनेस्को ने वर्ष 2016 में योग को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की अपनी प्रतिनिधि सूची में शामिल किया। यह युगांतरकारी मान्यता वैश्विक आरोग्य में भारत के योगदान को रेखांकित करती है।

योग विश्व की सबसे पुरानी ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसकी जड़े सिंधु सरस्वती सभ्यता (ईसा पूर्व 2700) तक मिलती है। संस्कृत से उपजे "योग" शब्द का अर्थ जोड़ना या एकतावद्ध करना है। इस तरह, यह शरीर और मन के मिलन का प्रतीक है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को देश भर में हजारों आयोजनों के जरिए मनाया जाता है। लेकिन इसका मुख्य आयोजन हर साल एक अलग शहर में किया जाता है। मुख्य आयोजन की शुरुआत 2015 में नई दिल्ली के राजपथ से हुई थी। इसके बाद इसे चंडीगढ़, लखनऊ, देहरादून, रांची, जबलपुर, श्रीनगर और विशाखापट्नम में आयोजित किया जा चुका है।

11 आयोजनों के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक वैश्विक आयोजन से बदलकर निवारक स्वास्थ्य देखभाल, स्वस्थ जीवन और आंतरिक संतुलन के लिए एक जन-आंदोलन बन चुका है। आज इसे 190 से अधिक देशों में मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का 12वां आयोजन दिनांक 21 जून 2026 को मनाया गया। इस बार मुख्य राष्ट्रीय कार्यक्रम की मेजबानी कोलकत्ता कर रहा है। इस वर्ष की थीम, स्वस्थ आयु के लिए योग है जो विश्व भर में जीवन भर स्वस्थ और सक्रिय जीवन जीने पर ध्यान देने पर जोर देती है। जैसे-जैसे दुनिया में बुज़ुर्गों की आबादी बढ़ रही है और गैर संचारी रोग व जीवनशैली से जुड़ी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं, ध्यान केवल जीवन के साल बढ़ाने से हटकर स्वस्थ रहने की अवधि, जीवन की गुणवत्ता और समग्र कल्याण को बेहतर बनाने पर केंद्रित हो रहा है।

स्वस्थ आयु का मतलब अब यह माना जाता है कि जीवन भर काम करने की क्षमता, चलने-फिरने की शक्ति, दिमागी सेहत और सामाजिक मेलजोल बनाए रखा जाए। इस योग सत्र के अंतर्गत योग एक बहुआयामी अभ्यास के रुप में अनेक योगासन करवाए गए, जो शारीरिक गतिविधि, श्वास नियंत्रण और सचेतनता को एक साथ जोड़ते है। ताड़ासन और त्रिकोणासन जैसे अभ्यास शरीर के पोस्चर और लचीलेपन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं, जिससे लंबे समय तक बैठने के दुष्प्रभावों को दूर किया जा सकता है। भुजंगासन और मकरासन रीढ़ की हड्डी के स्वास्थ्य और विश्राम को बढ़ावा देते हैं,

योग प्रशिक्षक द्वारा आसन, प्राणायाम और अन्य मुद्राओं के साथ संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी

जबकि अनुलोम-विलोम और भ्रामरी प्राणयाम जैसे श्वसन अभ्यास श्वास के प्रति जागरुकता और मानसिक शांति को बढ़ाते हैं। ध्यान एकाग्रता और मानसिक स्थिति को और अधिक मजबूत करने में मदद करता है। इस प्रकार ये सभी अभ्यास मिलकर स्वस्थ आयु के कई जरुरी पहलुओं में कदद करते हैं।

इसी क्रम में, दिनांक 22 जून 2026 को प्लाजा हाल में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विभिन्न योग मुद्राएं एवं प्राणायाम किए। सभी ने इस आयोजन में अत्यंत उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता दी, जो यह प्रमाणित करता है कि हमारा संस्थान एक विज्ञानीय संस्थान होने के नाते अपने कर्मचारियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ के प्रति सदैव ही सजग एवं सचेत रहता है। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस लोगो वाली टी-शर्ट जो विशेष रुप से तैयार करवाई गई थी, सभी प्रतिभागियों में वितरित की गई। इस आयोजन में डॉ. निशा ठाकुर, वैज्ञानिक-सी, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) को योग प्रशिक्षक के रुप में आमंत्रित किया गया था।

इसके साथ ही कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक प्रभारी डॉ. कैलाश चन्द्र पाण्डे, वैज्ञानिक-जी ने की। यह सत्र अत्यंत लाभदायक रहा और संस्थान के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यक्रम में प्रतिभागिता अत्यन्त उत्साहपूर्ण रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रवीण कुमार अतुल, वैज्ञानिक-एफ एवं श्री पंकज सिंह, प्रयोगशाला सहायक द्वारा किया गया, जिन्होंने सभी उपस्थित प्रतिभागियों को कार्यक्रम की रुपरेखा से अवगत कराया।

∞

- ## संस्थान में पारंगत प्रशिक्षण

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी शिक्षण संस्थान के माध्यम से केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए चलाए जा रहे पारंगत प्रशिक्षण के अंतर्गत संस्थान द्वारा 33 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों को जनवरी-मई 2026 सत्र में पारंगत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इससे पूर्व जुलाई-नवंबर 2023 सत्र में 29 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों तथा जनवरी-मई 2024 सत्र में 18 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राष्ट्रपति महोदय के आदेशानुसार केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु यह प्रशिक्षण अनिवार्य है। संबंधित प्रशिक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों को सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए पूर्णतः दक्ष बनाना है। इस तीसरे सत्र की परीक्षा का आयोजन भी संस्थान परिसर के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20 मई 2026 को सफलतापूर्वक किया गया।

∞

• संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (सप्ताह)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जो प्रत्येक वर्ष दिनांक 8 मार्च को विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्रेम प्रकट करते हुए, महिलाओं की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों एवं कठिनाईयों की सापेक्षता के अभाव में उत्सव के तौर पर मनाया जाता है। इसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को मान्यता देना तथा लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। इस दिवस की शुरुआत 20वीं सदी में हुआ था, जो उत्तरी अमेरिका और यूरोप में श्रमिक आंदोलनों से हुई, जहां महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई। बाद में वर्ष 1977 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे आधिकारिक रुप से मान्यता मिलने के बाद इसे वैश्विक स्तर पर व्यापक पहचान मिली। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 की थीम है “अधिकारी और न्याय के साथ-साथ हर महिला और बालिका के सशक्तिकरण हेतु वास्तविक कार्रवाई”। यह महिलाओं के अधिकारों को सशक्त बनाने, न्याय तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करने और विश्वभर में लैंगिक समानता को तेजी से आगे बढ़ाने पर जोर देती है।

रंगोली प्रतियोगिता के प्रतिभागी

सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थित महिला प्रतिभागी

इसी परिपेक्ष में दिनांक 16 एवं 17 मार्च 2026 को संस्थान परिसर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में अनेक रोचक एवं ज्ञानवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया। दिनांक 16 मार्च 2026 को संस्थान के प्रांगण में रंगोली प्रतियोगिता जैसी रोचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इसी के साथ संस्थान की महिला कर्मचारियों हेतु ब्लाइंड फोल्ड केट वॉल्क एवं लैमन रेस आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। दिनांक 17 मार्च 2026 को संस्थान के सभागार में महिला कर्मचारियों हेतु रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महिला प्रतिभागियों द्वारा गायन, कविता पाठ एवं नृत्य प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में दिनांक 16 मार्च को आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

इसी क्रम में दिनांक 17 मार्च 2026 को “महिला सशक्तिकरण” विषय पर एक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी, फॉउन्डर एंड चेयरपर्सन, द एलाएंस फॉर ग्लोबल गुड-जेंडर इक्वीटी एंड ईक्वेलिटी तथा एडवाईजर-बुमेन कोलेक्टिव फोरम” ने मुख्य अतिथि के रुप में कार्यक्रम को अपनी उपस्थिति से गरिमा प्रदान की। इस बैठक का उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना तथा महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक सशक्तिकरण के रणनीतियों पर विचार विमर्श किया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं दिनांक 17 मार्च को आयोजित कार्यक्रम का समग्र संचालन संस्थान की कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्रीमती मीनाक्षी भसीन द्वारा किया गया। उल्लेखित कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गए, जिसमें सार्थक परिवर्तन के लिए प्रेरणा प्राप्त हुई।

∞

• विश्व मलेरिया दिवस

संस्थान में दिनांक 25 अप्रैल 2026 को विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर अनेक प्रकार के रोचक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन गतिविधियों के प्रथम दिवस पर वैज्ञानिकों और पी.एचडी. छात्र-छात्राओं के व्याख्यान और वार्ताओं का आयोजन किया गया। इसके साथ ही, छात्रों के लिए एक "ड्रिवन टू एंड मलेरिया : नाउ वी कैन, नाउ वी मस्ट" विषय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र वितरित किए गए। इसी क्रम में, सर्वोदया कन्या विद्यालय, राज नगर, दिल्ली के छात्राओं द्वारा तैयार की गई पेंटिग्स भी प्रदर्शित की गई, जिन पर छात्राओं ने अपने विचारों और कल्पना को प्रस्तुत किया। सर्वोदय कन्या विद्यालय, राज नगर, दिल्ली में भाग लेने वाले और सहायता करने वाले शिक्षकों को पुरस्कार वितरित किए गए।

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर आयोजित गतिविधियों की झलक

अप्रैल माह के दौरान, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रांची द्वारा अल्बर्ट एक्का राजकीय मध्य विद्यालय में विश्व मलेरिया दिवस 2026 का जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जो सामुदायिक सहभागिता से विज्ञान संचार होने का एक सफल उदाहरण है। गहन वैज्ञानिक सामग्री को सुलभ और व्यावहारिक प्रदर्शनों के साथ मिलाकर, इस कार्यक्रम ने रांची के छात्रों पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला है। इस आयोजन ने इस बात की पुष्टि की है कि मलेरिया उन्मूलन केवल एक चिकित्सा की दिशा में ही चुनौती नहीं बल्कि एक सामाजिक चुनौती भी है – और जागरूक और सचेत नागरिकों का निर्माण करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि नई औषधियों और निदान विधियों का विकास करना है। राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रांची इस मिशन के प्रति प्रतिबद्ध है और इस जागरूकता कार्यक्रम की सफलता इसके वैज्ञानिक और जागरूकता कर्मचारियों के समर्पण का प्रमाण है। जैसे-जैसे भारत 2030 तक मलेरिया उन्मूलन की दिशा में आगे बढ़ रहा है, ऐसे कार्यक्रम महत्वपूर्ण स्तंभों के रूप में कार्य करते हैं - युवा नागरिकों की एक ऐसी पीढ़ी का पोषण करते हैं जो राष्ट्र के

सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों को समझती है, उनका सम्मान करती है और उनमें सक्रिय रूप से योगदान देती है।

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर अप्रैल माह के दौरान, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, बंग्लूरु द्वारा विभिन्न कॉलेजों के छात्रों और शिक्षकों के लिए क्षेत्रीय इकाई में दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आमंत्रित अतिथियों और क्षेत्रीय इकाई के वैज्ञानिकों द्वारा विशेषज्ञ वार्ताएं प्रस्तुत की गई, साथ ही क्षेत्रीय इकाई में कि गए कार्यों को प्रदर्शित करने वाले प्रदर्शन भी शामिल थे। कार्यशाला का विषय था - "मलेरिया को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प अब हम कर सकते हैं, अब हमें करना ही होगा"।

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर आयोजित गतिविधियों की झलक

∞

जनवरी-जून 2026 के दौरान संस्थान के सेवा-निवृत्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान को अपने जीवन का अमूल्य समय समर्पित कर सेवा-निवृत्त होने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारी संस्थान की अमूल्य धरोहर हैं। संस्थान परिवार उनकी दीर्घकालीन, समर्पित एवं निष्ठापूर्ण सेवाओं के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता है। उनके अमूल्य योगदान का ऋण शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। अपनी कर्मनिष्ठा, लगन एवं उत्कृष्ट कार्यशैली से उन्होंने संस्थान को विकास एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्थान परिवार उनके उज्ज्वल, स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की मंगलकामनाएँ करता है तथा उनके भावी जीवन के लिए हार्दिक शुभेच्छाएँ प्रेषित करता है। संस्थान से सेवा-निवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्ति की दिनांक
1	डॉ. एलेक्स ऐप्पन	वैज्ञानिक-एफ	31.01.2026
2	डॉ. एस.पी. सिंह	अनुसंधान वैज्ञानिक	31.01.2026
3	श्री लोचन मोहंती	एफएलए	31.01.2026
4	श्री किशन सिंह बिष्ट	अवर श्रेणी लिपिक	31.01.2026
5	श्री अजय मित्रा	एल.ए.-1	31.01.2026
6	श्री देवेन्द्र प्रसार	चौकीदार	28.02.2026
7	श्री प्रदीप कुमार राय	फील्ड वर्कर	28.02.2026
8	श्री एस.सी. प्रधान	फील्ड वर्कर	28.02.2026
9	श्री दिलीप शर्मा	वाहन चालक	30.04.2026
10	श्री देबेन तालुकदार	अवर श्रेणी लिपिक	30.04.2026
11	श्री लाल बाबू	एल.ए.-2	31.05.2026
12	श्री राम करण	परिचर	30.06.2026
13	श्री अतुल कुमार मिश्रा	वाहन चालक	30.06.2026
14	श्री एम.शाकिर	वाहन चालक	30.06.2026
15	श्री राजेश कुमार	कीट संग्राहक	30.06.2026
16	श्री एस.के. सतपथी	कीट संग्राहक	30.06.2026

जनवरी-जून 2026 के दौरान संस्थान के नवनियुक्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की विकास यात्रा के दौरान अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी सेवा-निवृत्त होकर अपनी जिम्मेदारियाँ नव-नियुक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सौंपते रहे हैं। संस्थान परिवार नव-नियुक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि संस्थान से जुड़े निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी प्रतिभा, कार्यकुशलता तथा समर्पण के बल पर संस्थान की प्रगति एवं उत्कृष्टता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे:-

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	कार्यभार ग्रहण करने की दिनांक
1	श्री सचिन कुमार मीणा	अवर श्रेणी लिपिक	09.03.2026
2	श्री यश कुमार जायसवाल	अवर श्रेणी लिपिक	16.03.2026
3	डॉ. वागिशा रावल	वैज्ञानिक-सी	30.03.2026
4	श्री राकेश कुमार	प्रशासन अधिकारी	01.06.2026
5	डॉ. आर.एम. पोरवाल	सहायक निदेशक (राजभाषा)	12.06.2026

∞